# Daily Gospel Reflections in Hindi

07 June 2019

## मत्ति 24:7-14

THOSE WHO ENDURES TO THE END WILL BE SAVED

आज का सुसमाचार विपत्तियों को आरंभ का वर्णन करता है। जब येसु येरूसालेम मंदिर से निकल कर आ रहे थे तब उन्होंने मंदिर के विनाश की भविष्यवाणी की। तब शिष्यों ने पूछा कि यह कब होगा और कैसे होगा ? उनके सवाल का उत्तर देते हुए येसु विपत्तियों के प्रारंभ के बारे में बताते है। ऐतिहासिक रूप से देखा जाये तो येसु के कथन के अनुसार, युद्ध, अकाल, महामारी और भूकंप ये सारी घटनायें यहूदी क्षेत्रों में घटित हुई और इसका साक्ष्य इतिहासकर जोसेफूस अपनी पुस्तक में देता भी है।

येसु कहते है कि विपत्ति के समय बहुत लोग विचलित होंगे और प्रेम का भाव घट जायेगा। शायद यह समस्या हमारी आध्यात्मक जिंदगी में आ सकती है। एक विश्वासी होने के कारण, एक फादर होने के कारण, एक सिस्टर होने के कारण, एक ईसाई होने के कारण जब लोग हमारी हंसी उडाते है, गलत समझते है, झूठे आरोप लगाते है, तब शायद हम भी विश्वास में कमजोर हो जाते है। प्रेम से एक दूसरे से बात नहीं कर पाते हैं। इस अवसर पर प्रभु का कथन हमें याद आयेगा – अंत तक जो धीर बना रहता है, उसे मुक्ति मिलेगी। अंत तक विश्वास में सुदृढ़ रहकर, प्यार में आगे बढ़ कर जीने के लिए कोशिश करें।

Rev. Fr. Ebin Uppukandathil

©Rights Reserved. Commission for Social Communications, Diocese of Sagar 2019